रीडिंग कॉर्नर बना सभी विषयों को सीखने का कोना

ताहिरा ख़ान

जब शिक्षक उद्देश्यों की स्पष्टता के साथ रीडिंग कॉर्नर की सहायता से विद्यार्थियों को पढ़ना-लिखना सिखाते हैं तब वे न सिर्फ़ भाषा सीखते हैं, वरन् विभिन्न पाठ्य विषयों से जुड़ी क्षमताओं का विकास भी कर रहे होते हैं। लेख में दर्ज अनुभव कुछ ऐसी ही प्रक्रियाओं को समझने में मदद करते हैं।

चित्र 1 : स्कूल पुस्तकालय में तल्लीनता से बाल साहित्य पढ़ते विद्यार्थी

विद्यालयी शिक्षा में 'पढ़ना' केवल भाषा सीखने का माध्यम नहीं है, अपितु विद्यार्थी के समग्र विकास का आधार है। पढ़ने के मायने हैं—पढ़कर विचारों का बनना, अपने परिवेश को जानना, समाज और परिस्थितियों से सामंजस्य कर पाना, तर्क करना, सही-ग़लत का निर्णय ले पाना, मूल्यों का विकास कर पाना, आदि। इन क्षमताओं के विकास के लिए हम अलग-अलग पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से कार्य करते हैं। यह काम 'रीडिंग कॉर्नर' के माध्यम से अधिक सुगम तरीक़े से हो सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पठन संस्कृति के विकास और आधारभूत साक्षरता पर ज़ोर है। इसके लिए 'रीडिंग कॉर्नर' का प्रावधान है। समझने की ज़रूरत है कि 'रीडिंग कॉर्नर' किताबों का कोना भर नहीं है, बल्कि सीखने की यात्रा का आकर्षक और प्रेरक अवसर है। जब विद्यार्थी विविध क़िस्म की किताबों से गुज़रता है तब उसके ज्ञान और समझ का दायरा बढ़ता है। बाल साहित्य के माध्यम से वह परिवेश और बाहरी दुनिया के जटिल मुद्दों को समझने का प्रयास करने लगता है। बाल साहित्य का सुनियोजित एक्सपोज़र उन्हें पाठ्यपुस्तक के सन्दर्भों को भी समझने में मदद करता है।

> **'रीडिंग कॉर्नर' किताबों का कोना भर नहीं है, बल्कि सीखने की यात्रा का आकर्षक और प्रेरक अवसर है।**

उद्देश्य

- 'रीडिंग कॉर्नर' में नियमित रूप से 'पढ़ने की घण्टी' की व्यवस्था करना;
- विद्यार्थियों को अपनी पसन्द की कहानियाँ पढ़ने और चुनने की आज़ादी देना;
- कहानियों पर बातचीत और विद्यार्थियों को चर्चा के मौक़े देना;
- पढ़ी हुई कहानी को सुनाने और बातचीत के अवसर देना;
- बाल साहित्य के ज़रिए विद्यार्थियों को प्रवीण पाठक बनाना;
- 'रीडिंग कॉर्नर' के संचालन में विद्यार्थियों की सहभागिता बनाना; आदि।

पढ़ने का कोना / पुस्तकालय प्रबन्धन समिति

सत्र की शुरुआत में पुस्तकालय प्रबन्धन समिति से जुड़ी सारी तैयारी कर लेती हूँ। जैसे–पंजिका निर्माण जिसमें किताबों का लेन-देन दर्ज हो सके; किताबों का स्तरीकरण और उनका बेहतर डिस्प्ले; सीखने के स्तर के आधार पर विद्यार्थियों के समूह बनाना; पुस्तकालय के सुचारु संचालन के लिए ज़िम्मेदारियाँ तय करना; किताबों को इस तरह व्यवस्थित करना कि सभी किताबें विद्यार्थियों की पहुँच में हों; बैठक व्यवस्था बनाना; आदि।

गणितीय अवधारणाओं पर काम

अंशुल ने अपनी पसन्द की एक किताब उठाई, और उसे कनिष्का को पढ़ाने लगा; "एक नन्हा बादल बीच गगन उड़ता आया।" कनिष्का भी किताब के चित्र देखकर बहुत ख़ुश थी क्योंकि बहुत सुन्दर बादल बातें कर रहे थे। बादल थे 10, तो 1 से 10 तक गिनती भी दोहराई जा रही थी। जो किताब पढ़ी जा रही थी उसका शीर्षक था–*आओ गिनें बादल।* कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों को सभी किताबों की गिनती करने के लिए कहा। उन्होंने इस तरह के आँकड़े पेश किए–

हिमांशु : मैम, पूरी किताबें 456 हैं।

नीलू : *बुलबुल सीरीज़* की 125 हैं।

ऋतिका : *बरखा सीरीज़* की 19 हैं।

सुनयना : अन्य किताबें 197 हैं।

सुरेश : गढ़वाली भाषा की 68 किताबें हैं।

आकाश : अँग्रेज़ी की 47 किताबें हैं।

मीनाक्षी : दो भाषाओं वाली 6 और *बुलबुल* अँग्रेज़ी की 17 हैं। 24 अन्य हैं।

नीरव : हिन्दी भाषा की सभी किताबें 409 हैं।

हमने रीडिंग कॉर्नर के डेटा का प्रयोग कक्षा 4 में अंकगणित की अवधारणा यथा स्मार्ट चार्ट और आँकड़ों के प्रदर्शन को समझने में किया। एक समूह को टेली चिह्न लगाकर टेबल बनाने, बार चार्ट में प्रदर्शित करने का काम दिया। दूसरे समूह से कहा कि 456 किताबों में से जितनी किताबें पढ़ी हैं, उन्हें प्रतिशत में बताएँ। कक्षा 2, 3 और 4 के विद्यार्थियों को जोड़, घटाव, गुणा, भाग, स्थानीय मान, आदि के प्रश्न दिए। जैसे–बताओ कि *बरखा सीरीज़* और *बुलबुल सीरीज़* की कितनी किताबें हैं; दोनों में कितना अन्तर है; आदि।

कक्षा 3 का हार्दिक एक किताब को ध्यान से देख रहा था। वह बोला, "मैंने भी चक्की देखी है जिसमें आटा पीसते हैं। मेरे घर पर दादी पीसती हैं। और घास काटने की मशीन भी है, और थाली, शीशा भी ऐसा ही गोल है।" वह गोल-गोल चीज़ों के बारे में बताने लगा। असल में, वह रेखागणित की पुस्तक *वृत्तों की दुनिया* देख रहा था। यहीं से वृत्तों के बारे में बात शुरू हुई। बात वस्तुओं से होती हुई ज्यामितीय आकृतियों–वृत्त, त्रिभुज, वर्ग, आयत, घन-घनाभ, शंकु–में अन्तर तक गई। फिर इसमें परिमाप, क्षेत्रफल तथा आयतन निकालना भी शामिल हो गया, यानी कक्षा 4 के पाठ्यक्रम पर चर्चा तक।

वृत्त की अवधारणा पर बात करते हुए वृत्त की परिधि, त्रिज्या और वृत्त बनाना सिखाना आसान हो गया। नीलेश और ऋतिक कुछ प्रश्नों में अटक रहे थे, और उदास-से थे। मैंने एक किताब का संवाद बोला, "डरना नहीं, बना लो मीत, तभी होगी गणित पर जीत।" यह सुनकर विद्यार्थियों के चेहरों पर मुस्कान आ गई। कहानी थी–*गणित के पंख।* यह कहानी विद्यार्थियों को बहुत अच्छी लगती है। विद्यार्थियों ने ठान लिया है कि गणित से डरेंगे नहीं।

पर्यावरण अध्ययन के मुद्दे

कक्षा 3, 4 और 5 के विद्यार्थियों से कहा, "सबसे अच्छी लगने वाली कविता सुनाओ।" विद्यार्थी ख़ुश होकर गाने लगे। कविता की पंक्तियाँ कुछ ऊपर-नीचे थीं–

हलवा बढ़िया गाजर का

सब्ज़ी खाऊँ हरी मटर की

सूप बनाऊँ जिसका चाहूँ

बन्दगोभी खाऊँ कच्ची-कच्ची

कक्षा 3 के विद्यार्थी मिलकर गा रहे थे, और बातें कर रहे थे। निर्भय बोला, "काश कोई बोलने वाला ख़रगोश मिल जाता!" अंकिता कह रही थी, "हाँ, मैं तो उससे ढेर सारी बातें करती, और गाजर भी ले लेती!" मैं उनकी बातें सुन रही थी। उनके लिए *बोलने वाला ख़रगोश* हैरान करने वाली बात थी। ऐसी ही हैरानी उन्हें *ऐलिस इन वंडरलैंड* पढ़कर हुई थी, जहाँ एक ख़रगोश बातें कर रहा है, गाना गा रहा है, और फुसफुसा रहा है। ऐसी कहानियों से कई कल्पनाएँ जन्म लेती हैं। कक्षा 3, 4 और 5 के पर्यावरण विषय के पाठ्यक्रम में 'भोजन' थीम है। समेकित शिक्षण प्रक्रिया के तहत इस कहानी पर चर्चा शुरू की। मैंने कहा, "कचरू ख़रगोश तो हलवा खाता है, आप लोग क्या-क्या खाते हो?" वे अपनी पसन्द के खाने बताने लगे। मैंने कहा, "एक थाली का चित्र बनाओ, उसमें लिखो कि आपको क्या पसन्द है।"

चित्र 2 : टीएलएम की मदद से विद्यार्थियों को बातचीत में शामिल करतीं शिक्षिका

सब विद्यार्थी लिखने लगे। कक्षा 1 के विद्यार्थियों के लिए शब्द लेखन का काम साथ में चल रहा था। वे अपनी पसन्द की खाने की चीज़ों के नाम कुछ तरह से लिख रहे थे।

हार्दिक : हलवा पूरी

अंकिता : दाल-चावल

मीता : सब्ज़ी, दाल-रोटी

सुकेश : राजमा चावल

सुप्रिया : गोभी की सब्ज़ी, दाल-रोटी

इस तरह खाने की लिस्ट तैयार हो गई। विद्यार्थियों से खाने के पोषक तत्त्वों और स्वस्थ शरीर के लिए ज़रूरी चीज़ों के बारे में चर्चा शुरू की। विद्यार्थियों को समझाया कि सन्तुलित भोजन क्या है। खाने में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन, खनिज, लवण, आदि कितने ज़रूरी हैं। इसके बाद हमने मिड डे मील की थाली में इन्हें ढूँढ़ने का प्रयास किया। अब विद्यार्थी ख़ुद बताते हैं कि आज उनकी थाली में क्या है और क्या नहीं। नीलू, ऋतिका, मनीषा और तनुजा ने सब्ज़ियों से मिलने वाले पोषक तत्त्वों के बारे में जानकारी ली।

मैंने विद्यार्थियों को एक किताब दी—*सब्ज़ियों वाले गमले।* इस किताब से विद्यार्थियों को सब्ज़ियाँ खाने से होने वाले लाभ बताए। सब्ज़ियों और फलों में कौन-से विटामिन मिलते हैं, इस पर बात की। जैसे—गाजर, पालक, पपीता और आम से विटामिन

चित्र 3 : विद्यार्थियों को पढ़ने के प्रयासों में मदद करतीं शिक्षिका

ए मिलता है, और इसकी कमी से रतौंधी रोग हो जाता है। बीच में अंकिता बोली, "मेरी माँ और दादी खेत तैयार करती हैं।" विद्यार्थियों ने अपने अवलोकनों के आधार पर खेत बनाने, खाद डालने और बीज बोने का तरीक़ा भी बताया। कुछ विद्यार्थियों ने बताया कि उनके बाबा सुबह खेत से सब्ज़ी लेकर मण्डी जाते हैं। कनिका ने बताया, "धनिया बोना आसान है। इस बार हमने बहुत सारा धनिया मण्डी में बेचा।"

"बीज कहाँ से लाते हो?" पूछने पर विद्यार्थियों ने बताया कि बीज फ़सल पकने पर बनाते हैं। अनाज के बीज बाज़ार से ख़रीदते हैं। इस दौरान विद्यार्थियों को एक कहानी याद आ गई—*एक था दाना अनजाना।* जब कहानी पर चर्चा हुई तब विद्यार्थियों ने बताया कि हम सोचते थे कि जंगलों में पेड़-पौधे कौन लगाता होगा, कौन खाद डालता होगा, बीज कहाँ से आते होंगे, यह कहानी पढ़कर सब समझ आ गया।

पशु-पक्षी, हवा-पानी, मधुमक्खी-चिड़िया सब बीज फैलाते हैं। चिड़िया अपनी चोंच से दाने ज़मीन में डाल देती है। बादल बारिश करते हैं। सब कितना मज़ेदार है न! सब एक दूसरे की मदद कर रहे हैं। प्रकाश ने बताया, "उसको सभी पात्रों में सबसे मज़ेदार 'अनजाना' लगा क्योंकि उस दाने को ये नहीं पता था कि वो कौन है। जब वो बड़ा हुआ तब मालूम हुआ कि वह बरगद है। उसके आकार-प्रकार को देखकर पहले कोई उसको प्यार नहीं करता था। अब वह सबको छाया देता है।"

ऐसी ही एक कहानी *अनोखा रिश्ता* पढ़कर विद्यार्थियों ने कहा कि हम भी अपने दादा-दादी के नाम से हर साल पेड़ लगाएँगे। उसकी ख़ूब देखभाल करेंगे क्योंकि पेड़ हमें छाया, लकड़ी, पत्ते और ऑक्सीजन देते हैं। वे हमारे मित्र हैं। 'दोस्त', 'प्यासी मैना', आदि कहानियों पर भी बात चली। ये कहानियाँ जल चक्र, पानी की आवश्यकता, जल संरक्षण पर चर्चा के अवसर देती हैं। *घर की खोज, घर और घर, भाग सनी भाग* और *बैम्बू हाउस* किताबों पर बातचीत से घर की आवश्यकता, घर के प्रकार, पक्षियों, जानवरों के घरों पर बातचीत हुई। बताया कि हाउसबोट, फ़्लैट, झोपड़ी, तम्बू, इग्लू, वृद्धाश्रम, अनाथालय, आदि सभी घर हैं। हमने घरों के मॉडल भी बनाए।

कहानी *अच्छा कौन* पर की गई बातचीत अच्छा-बुरा से आगे बढ़कर लिंगभेद तक गई। कक्षा 4 की ख़ुशी ने बताया कि घर पर सब उसी को काम बताते हैं, पर भाई को नहीं। यह उसको अच्छा नहीं लगता। साक्षी ने बताया कि उसका भाई नहीं है तो बाबा और माँ दु:खी रहते हैं।

भाषा शिक्षण और रचनात्मक लेखन

मनीषा ने 'पढ़ने की घण्टी' में एक किताब *सारी दुनिया, प्यारी दुनिया* पढ़ी। इसे पढ़कर बोली, "मैम, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे ये लड़की मैं ही हूँ। जो वह कहती है न, वही मैं भी सोचती हूँ। मुझे भी बारिश पसन्द है, पर तूफ़ान नहीं। नदी पसन्द है, पर

बाढ़ नहीं।" और इस तरह प्राकृतिक आपदाओं पर कक्षा 4 और 5 में बात हुई। कक्षा 1 की कनिष्का इस किताब के चित्रों को ध्यान से देख रही थी। मैंने कहा, "बताओ क्या-क्या देखा?" वो बोली, "लड़की, घर, मुर्ग़ा, सूरज, पानी, कुआँ, पेड़, पत्ता, बारिश, नदी, पहाड़, बर्फ़।" बहुत सारे शब्द उसने बता दिए। इस शब्द संसाधन के साथ भाषा की मुख्य दक्षताओं पर काम शुरू हो सकता था। फिर कक्षा 1 से इन सभी शब्दों को कॉपी पर लिखवाया और 'घर' शब्द पर चर्चा की।

कक्षा 2 के विद्यार्थियों से हर शब्द पर कॉन्सेप्ट मैप बनाने को कहा। घर का कॉन्सेप्ट मैप बनाते-बनाते बहुत सारे शब्द मिले। जैसे—घर, मकान, आँगन, कमरा, रसोई, चूल्हा, लकड़ी, फुकनी, चिमटा, तवा, चौका, पकाना, धोना, बेलन, चारपाई, बिस्तर, कुर्सी, मेज़, खिड़की, दरवाज़ा, दाल, तेल, कढ़ाई, भगोना, बिल्ली, बकरी, गोशाला, खेत, आदि। ये विद्यार्थियों के ख़ुद के शब्द थे। शब्दों का एक पिटारा बन गया। इन्हीं शब्दों से कक्षा 2 और 3 में वाक्य बनाना, विलोम शब्द ढूँढ़ना, पर्यायवाची शब्द, शब्दों में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण छाँटना जैसे अभ्यास कार्य करवाए। कक्षा 4 को इन्हीं में से अपनी पसन्द के किसान, बकरी, खेत, कुत्ता, घर जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हुए कहानी बनाने को कहा।

अगले दिन *घर की खोज* कहानी पर बातचीत की। कक्षा 4 के विद्यार्थियों को कहानी को अपने शब्दों में लिखने को कहा। कक्षा 5 को इसी कहानी के पात्रों से कोई नई कहानी लिखने को कहा। *बरखा सीरीज़* की *फूली रोटी, गोलगप्पे, मिली का गुब्बारा* ऐसी कहानियाँ हैं जो शुरुआती लेखन में विद्यार्थियों के लिए काफ़ी उपयोगी हैं।

यदि विद्यार्थी कहानी लिखने लगें तो फिर वे समीक्षा करना, तुलना करना, पात्र बदलकर कहानी लिखना, कहानी के अन्त बदलना जैसी उच्च दक्षताओं का प्रयोग कर सकते हैं। यह काम पाठ्यक्रम में सहायक उपकरण (helping tool) के रूप में काम करता है। विद्यार्थी *वायु* किताब को बहुत ध्यान से देख रहे थे। उसमें एक बच्चा पंख लगाए उड़ रहा था। कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों ने अनुमान लगाकर बताया कि ये लड़का अपनी माँ से बातें कर रहा है। वह अपनी माँ से बहुत प्यार करता है। उसके कान के पास मच्छर भी आ रहे हैं। वहाँ कौवे भी हैं, और दादी भी है। कहानी के चित्र इतने जीवन्त थे कि विद्यार्थियों को अपने परिवार के पात्र उनमें दिखाई दे रहे थे।

> **यदि शिक्षक को उद्देश्य की स्पष्टता है तब लक्ष्य प्राप्ति में उसे और विद्यार्थियों, दोनों को काफ़ी आनन्द आता है।**

दादा-दादी, माँ, मक्खी, मेंढक, कौवा, मुर्ग़ा, तितली, पानी, नाव, चाँद, तारे, आदि उनकी कल्पना में आने लगे। अनुमान लगाकर वे कहानी कहने लगे। इन्हीं शब्दों को बोर्ड पर लिखा, और विद्यार्थियों से कहा, "पढ़ो, और इन पर जो चित्र समझ आ रहा है, बनाओ।" विद्यार्थियों ने चित्रों के नाम हिन्दी में लिखे। मैंने इन्हें अँग्रेज़ी में भी लिख दिया। फिर कक्षा 2 और 3 को पक्षियों एवं जानवरों के नाम लिखवाए। अँग्रेज़ी पर काम करने के लिए अँग्रेज़ी शब्द भण्डार ज़रूरी है। जैसे—*ग्रीट व्हेन यू मीट* पढ़ाते हुए बोर्ड पर नए शब्द लिखते हुए बार-बार उन्हें पढ़वाया। फिर चित्रों पर बात करके अनुमान लगाने को कहा। कहानी को हिन्दी में भी सुनाया। पहले ख़ुद रीडिंग की, फिर विद्यार्थियों से दोहराने को कहा। इस तरह बार-बार उच्चारित करवाया। यह काम धीरे-धीरे किया क्योंकि अँग्रेज़ी हमारे परिवेश की भाषा नहीं है। घर पर या परिवेश में अँग्रेज़ी का इस्तेमाल नहीं होता, इसलिए विद्यालयों में विद्यार्थियों के साथ अँग्रेज़ी पर ज़्यादा काम करने की आवश्यकता होती है।

पाठ्यपुस्तक पर काम करने से पहले जब अँग्रेज़ी बाल साहित्य पर काम करते हैं तब विद्यार्थियों को अधिक फ़ायदा होता है। कुछ किताबें जो मुझे अधिक उपयोगी लगती हैं उनमें डॉ. सिअस (Dr. Seuss) की किताबें मददगार हैं। कुछ अन्य किताबें *हेल्पिंग हैण्डबुक, लिटिल सनशाइन, अप डाउन* आदि हैं।

शिक्षक अवधारणा को समझाने के लिए बाल साहित्य जैसे उपयोगी संसाधनों को योजनाबद्ध तरीक़े से इस्तेमाल करें तब विद्यार्थियों का सीखना काफ़ी मज़ेदार हो जाता है। विद्यार्थियों के साथ सीखने के प्रतिफल एक दिन में अर्जित नहीं होते, इसके लिए धैर्य, रणनीति और योजना की ज़रूरत होती है। यदि शिक्षक को उद्देश्य की स्पष्टता है तब लक्ष्य प्राप्ति में उसे और विद्यार्थियों, दोनों को काफ़ी आनन्द आता है।

ताहिरा ख़ान प्राथमिक विद्यालय डांडा जंगल, देहरादून, उत्तराखण्ड में शिक्षिका हैं। वे कक्षा में नवाचारों को लेकर हमेशा प्रयासरत रहती हैं। वे अपने नवाचारों के अनुभवों पर आधारित अपना रिसर्च पेपर अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के सेमिनार में प्रस्तुत कर चुकी हैं।

सम्पर्क : tahirakhan14527@gmail.com